Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 : Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिलस अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

दिसंबर/2022 ई

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

December-2022

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

Date of Publication: 05-12-2022

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆ 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beg ✆ 9915223313

Annual Subscription: Rs-250/- | Per Issue: Rs-25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

14-8-2022 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला कटक, ढेनकेनाल, केंद्रपाड़ा (ओडिशा) के स्टेज का एक दृश्य।

14-8-2022 को आयोजित लोकल सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भद्रक (ओडिशा) के स्टेज का एक दृश्य।

8-10-2022 को आयोजित लोकल सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह क़ादियान में खेले गए वॉलीबाल मैच का एक दृश्य।

9-10-2022 को आयोजित लोकल सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह क़ादियान में इनामात वितरण करते हुए श्री मौलाना अताउल मुजीब लोन साहिब सदर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत।

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

14-8-2022 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला कटक, ढेनकेनाल, केंद्रापाड़ा (ओडिशा) में हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य ।

14-8-2022 को आयोजित लोकल सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भद्रक (ओडिशा) में हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य ।

28-9-2022 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह केरंग (ओडिशा) में हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य ।

28-9-2022 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह केरंग (ओडिशा) के स्टेज का एक दृश्य ।

10-11-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह चेन्नई (तमिल नाडु) द्वारा आयोजित तब्लीग़ दिवस का एक दृश्य ।

10-11-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह चेन्नई (तमिल नाडु) द्वारा आयोजित बुक स्टाल का एक दृश्य ।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰهِ

سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 20   दिसम्बर 2022   **Issue - 12**

निगरान

अताउल मुजीब लोन

सम्पादक

सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक

शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री

09915379255

मैनेजर

ताहिर अहमद बेग

Ph. +91 99152 23313

कम्पोज़िंग

आसमा तय्यबा

प्रैस

फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस

क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 250 ₹

विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान

ऐवाने अन्सार, भारत

क़ादियान - 143516

ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब

फोन : 01872-220186

फैक्स : 01872-224186

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - चन्दा तहरीक जदीद में आगे बढ़ने का महानतम मुक़ाबला	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन तरक़्क़ी की तरफ बढ़ने वाला मज्लिस अन्सारल्लाह का बजट	6
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा और तब्लीग़ का फर्ज़	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم

दर्सुल क़ुर्आन

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ
قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ○

(सूरत हदीद: आय्त 11)

अनुवाद - और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के रास्ता में ख़र्च नहीं करते हालाँकि आसमान और ज़मीन की मीरास अल्लाह ही की है हे मोमिनो फ़तह से पहले जिसने ख़ुदा की राह में ख़र्च किया और इस की राह में जंग की वह उस के बराबर नहीं हो सकता जिसने फ़तह के बाद ख़र्च किया और फ़तह के बाद जंग की। फ़तह से पहले ख़र्च करने वाले और जंग करने वाले दर्जा में बहुत ज़्यादा हैं और अल्लाह ने दोनों क़िस्म के लोगों से नेकी का वादा किया है। और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से ख़ूब अच्छी तरह परिचित है। (तफ़सीर सग़ीर)

दर्सुल हदीस

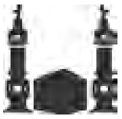

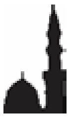

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : اَلسَّخِيُّ قَرِيْبٌ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى
قَرِيْبٌ مِنَ النَّاسِ قَرِيْبٌ مِنَ الْجَنَّةِ بَعِيْدٌ مِنَ النَّارِ وَالْبَخِيْلُ بَعِيْدٌ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى بَعِيْدٌ مِنَ النَّاسِ بَعِيْدٌ مِنَ الْجَنَّةِ
قَرِيْبٌ مِنَ النَّارِ وَالْجَاهِلُ السَّخِيُّ اَحَبُّ اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى مِنَ الْعَابِدِ الْبَخِيْلِ۔

(कशीरिया अलजूद वल् सख़ा पृष्ठ 122)

अनुवाद - हज़रत आयशा रज़ि वर्णन करती हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया दानी अल्लाह के क़रीब होता है लोगों से क़रीब होता है और जन्नत के क़रीब होता है और दोज़ख़ से दूर होता है । इस के विपरीत कंजूस अल्लाह तआला से दूर होता है , लोगों से दूर होता है , जन्नत से दूर होता है लेकिन दोज़ख़ के क़रीब होता है । अनपढ़ दानी कंजूस आबिद से अल्लाह तआला को ज़्यादा महबूब है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

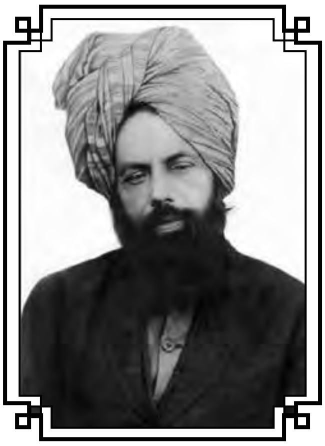

इस्लाम की तरक़्क़ी के लिए अपने मालों को ख़र्च करो

"एक बार हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रुपया की ज़रूरत बतलाई ,तो हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो घर का सारा सामान लेकर हाज़िर हो गए। आप ने पूछा अबूबकर! घर में क्या छोड़ आए। तो जवाब में कहा। अल्लाह और रसूल का नाम छोड़ आया हूँ ... दुनिया में इन्सान माल से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करता है। इसी लिए इल्मे ताबीर रोअया में लिखा है कि अगर कोई व्यक्ति देखे(ख़वाब में) कि उसने जिगर निकाल कर किसी को दिया है तो इस से अभिप्राय माल है। यही कारण है कि हक़ीक़ी तक़्वा और ईमान को प्राप्त करने के लिए फ़रमाया لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ (आले-इम्रान 93) हक़ीक़ी नेकी को हरगिज़ न पाओगे। जब तक कि तुम प्रिय चीज़ ख़र्च न करोगे। क्योंकि मानव जाति के साथ हमदर्दी और सुलूक का एक बड़ा हिस्सा माल के ख़र्च करने की ज़रूरत बतलाता है। और अब्नाए जिंस और मानव जाति की हमदर्दी एक ऐसी चीज़ है जो ईमान का दूसरा भाग है जिसके बिना ईमान सम्पूर्ण और सुदृढ़ नहीं होता। जब तक इन्सान क़ुर्बानी न करे दूसरे को लाभ कैसे पहुंचा सकता है। दूसरे की लाभ पुहंचाने और हमदर्दी के लिए क़ुर्बानी ज़रूरी चीज़ है और इस आयत में لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ में इसी क़ुर्बानी की शिक्षा और हिदायत फ़रमाई गई है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग1 पृष्ठ 367)

"जबकि मौत का बाज़ार गर्म है तो क्या रुपए और जायदाद सिर पर उठा कर ले जाओगे? हरगिज़ नहीं। फिर अगर इन निशानों को देखकर भी तबदीली नहीं करते तो क्योंकर कह सकते हो कि ख़ुदा तआला पर ईमान है। इस्लाम की तरक़्क़ी के लिए अपने मालों को ख़र्च करो हम अपने नफ़स के लिए कुछ नहीं चाहते। कई बार यह ख़्याल किया है कि अपने गुज़ारा के लिए तो पाँच सात रुपया मासिक काफ़ी हैं और जायदाद इस से ज़्यादा है। फर्मे जो बार-बार ताकीद करता हूँ कि ख़ुदा तआला की राह में ख़र्च करो।ये ख़ुदा तआला के हुक्म से है क्योंकि इस्लाम उस वक़्त तनज़्ज़ुल की हालत में है। बैरूनी और अंदरूनी कमज़ोरीयों को देखकर तबीयत बेक़रार हो जाती है।और इस्लाम दूसरे मुख़ालिफ़ मज़ाहिब का शिकार बन रहा है। पहले तो सिर्फ ईसाईयों ही का शिकार हो रहा था ...जब ये हालत हो गई है तो क्या अब इस्लाम की तरक़्क़ी के लिए हम क़दम ना उठाएं? ख़ुदा तआला ने ईसी उद्देश्य के लिए तो इस सिलसिला को स्थापित किया है। अत: उस की तरक़्क़ी के लिए कोशिश करना अल्लाह तआला के हुक्म और इच्छा की पूर्ति है। इसलिए इस राह में जो कुछ भी ख़र्च करोगे वह पहुत सुनने वाला और बहुत देखने वाला है।

यह वादा भी अल्लाह तआला की तरफ़ से हैं कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के लिए देगा। मैं इस को कुई गुणा बरकत दूँगा। दुनिया ही में उसे बहुत कुछ मिलेगा और मरने के बाद आख़िरत का बदला भी देख लेगा कि किस क़दर आराम मिलता है। अत: इस वक़्त मैं इस बात की तरफ़ तुम सबको तवज्जा दिलाता हूँ कि इस्लाम की तरक़्क़ी के लिए अपने मालों को ख़र्च करो।"

(मलफ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 669)

सम्पादकीय

चंदा तहरीक जदीद में आगे बढ़ने का महानतम मुक़ाबला

इन्सान की फ़ित्री योग्यताओं को बढ़ाने और इस राह में रोक होने वाले तत्वों को पवित्र करने का काम तज़्किया है। इस्लाह तथा तर्बीयत का यह दोहरा काम क़ुरआन की एक परिभाषा है। तज़्किया नफ़्स विजय की कुंजी है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है।قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَكّٰٮهَا (अश्शम्स10)अर्थात अवश्य वह सफल हो गया जिसने इस (नफ़्स) को पवित्र किया। तज़्किया नफ़्स का एक विशेष माध्यम माल की क़ुर्बानी है। 1934 ई में ''मज्लिस अहरार''ने दावा किया कि ''हम कादियान की ईंट से ईंट बजा देंगे,हम मिनारतुल-मसीह की ईंटें दरया ब्यास में बहा देंगे''। तब हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह सानी रज़ि ने एक बरकत वाला , इन्क़िलाबी और इल्हामी तहरीक जारी फ़रमाई जो जमाअत में ''तहरीक जदीद''के नाम से मशहूर है। हज़ूर रज़ि फ़रमाते हैं

"अत: अपने नफ़्सों में तब्दीली पैदा करो, दिलों को पवित्र करो, ज़बानों को नर्म और अपने आपको इस बात का आदी बनाओ कि ख़ुदा के लिए दुख और तकलीफों को बर्दाश्त करो...तहरीक की जदीद का उद्देश्य भी यही है...तुम अहरार के फ़ित्ना से मत घबराओ ख़ुदा मुझे और मेरी जमाअत को फ़तह देगा ...ज़मीन हमारे दुश्मनों के पांव से निकल रही है। और मैं उनकी शिकस्त को उन के क़रीब आते देख रहा हूँ।'' (अलफ़ज़्ल 3 मई 1935 ई)

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में माली क़ुर्बानी को क़र्ज़ा हसना वर्णन फ़रमाया है। और बदला के रूप में दुनिया तथा आख़िरत में बेहतरीन बदला, गुनाहों की माफ़ी,जन्नत में दाख़िला क़रार दिया है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माल की क़ुर्बानी की नसीहत करते हुए फ़रमाया। दो आदमियों के अतिरिक्त किसी पर रशक नहीं करना चाहीए । एक वह आदमी जिसको अल्लाह तआला ने माल दिया और उसने उसे अल्लाह के मार्ग में ख़र्च कर दिया।(बुख़ारी अलज़कू)

अल्लाह तआला फ़रमाता हैهٰۤاَنۡتُمۡ هٰۤؤُلَآءِ تُدۡعَوۡنَ لِتُنۡفِقُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ (मुहम्मद 39)अर्थात देखो तुम वे लोग हो कि तुम्हें अल्लाह की राह में ख़र्च के लिए बुलाया जाता है। चूँकि जमाअत अहमदिया ख़ुदा तआला की आख़िरी जमाअत है। अत: अब यहां सुस्त लोग और ख़ानदान मांद पड़ जाएंगे और नए अहमदी अहमदियत के आकाश में जगमगाएँगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलम फरमाते हैं।''एक टहनी के ख़ुशक हो जाने से सारा बाग़ ख़ुशक नहीं हो सकता। जिस टहनी को अल्लाह तआला ख़ुशक करना चाहता है ख़ुशक कर देता है और काट देता है और इस की जगह और टहनियां फलों और फूलों से लदी हुई पैदा कर देता है।"

(आसमानी फ़ैसला। रुहानी ख़ज़ाइन भाग 4 पृष्ठ 246)

हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह अल ख़ामिस अय्यदहुल्ला तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ 2010 ई से क़ुर्बानी में प्राथमिकता ले जाने वाली भारत के दस प्रान्तों और दस जमाअतों का वर्णन कर रहे रहे हैं। जो दर्ज ज़ेल हैं।

साल	अव्वल	दोम	सोम	चहारुम	पंजुम
2010	हैदराबाद	कालीकट	कादियान	कलकत्ता	कन्नूर
2011	करोलाई	कालीकट	हैदरावबाद	कलकत्ता	कन्नूर
2012	कोइम्बटोर	करोलाई	कालीकट	हैदराबाद	क़ादियान

2013	करोलाई	कालीकट	हैदराबाद	क़न्नूर टाऊन	वंगाडी
2014	करोलाई	कालीकट	हैदराबाद	क़ादियान	कन्नूर टाऊन
2015	करोलाई	हैदराबाद	कालीकट	क़ादियान	पत्था प्रियम
2016	करोलाई	कालीकट	हैदराबाद	पत्था प्रियम	क़ादियान
2017	कोलीकट	पत्ता प्रियम	क़ादियान	हैदराबाद	कलकत्ता
2018	कादियान	हैदराबाद	पत्त प्रियम	चन्नई	कालीकट
2019	करोलाई	क़ादियान	पत्ता प्रियम	हैदराबाद	कोयम्बटूर
2020	कोयमबटूर	करोलाई	कादियान	पत्ता प्रियम	हैदराबाद
2021	क़ादियान	कूयम्बटूर	हैदराबाद	करोलाई	पत्ता प्रियम
2022	कोयमटूर	कादियान	करोलाई	पत्ता प्रियम	कालीकट

हुज़ूर अनवर माल की क़ुर्बानी के बारे में घटनाएं वर्णन करते हैं कि किस प्रकार नए अहमदी आगे बढ़ रहे हैं। दुआ है कि अल्लाह तआला हम सब अन्सार को माल की क़ुर्बानी में आदगे बढ़ने की तौफीक दे।

(हाफिज़ सय्यद रसूल नयाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout, Kasturi Nagar, BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

तरक़्क़ी की तरफ़ बढ़ने वाला, मज्लिस अंसारुल्लाह का बजट।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने 12 अप्रैल 2021 ई को मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के साथ आयोजित वर्चोल मुलाक़ात के अवसर पर क़ियादत माल के कामों में बेहतरी लाने के बारे में हिदायत करते हुए फ़रमाया कि लोगों को बताएं कि माली क़ुर्बानी क़ुरआन करीम का आदेश है। यह कोई टैक्स नहीं है।...यह तुमने जो भी देना है अल्लाह तआला की प्रसन्नता को पाने के लिए देना है और क़ुरआन के आदेश के अधीन देना है। तो अगर सही तरीक़े से नर्मी से प्यार से , समझा के , हिक्मत से , दानाई से , .. फिर मौएज़ल हिकमा का इस्तिमाल करें तो आपका वाज़ सफल हो जाएगा।

अत: इंतिज़ामिया को चाहिए कि अन्सार को माली क़ुर्बानी की तरफ़ ध्यान दिलाते रहें। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"जमाअत की इंतिज़ामिया को भी कोशिश करनी चाहीए कि तमाम कमज़ोरों और नए आने वालों को भी माली क़ुर्बानी के महत्तव से आगाह करें, उन पर स्पष्ट करें कि क्या महत्तव है। अल्लाह तआला के हुक्मों से उनको परिचित कराऐं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस बारे में जो इर्शादात हैं उनसे लोगों को आगाह करें। अगर नहीं करते तो फिर मेरे नज़दीक इंतिज़ामीया भी ज़िम्मेदार है कि वह उन लोगों को नेकियों और अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल से वंचित कर रहे हैं। जैसा कि मैंने कहा इस जिहाद से फिर नफ़स के जिहाद की भी आदत पड़ेगी, अपनी तर्बीयत की तरफ़ भी तवज्जा पैदा होगी, इबादतों की भी आदत पड़ेगी।

(ख़ुत्बा जुम्अ 6 जनवरी 2006 ई)

लाहे मल: माल विभाग

लाहे अमल में माल विभाग के अधीन नीचे लिखी हिदायतों की तरफ़ विशेष ध्यान दें।

(1) अपना तशख़ीस किया गया बजट दफ़्तर अंसारुल्लाह में 31 जनवरी तक ज़रूर भिजवाएं।

(2) बजट की वसूली के लिए दुआओं के साथ साथ हर महीना वसूली की कोशिश करें।

(3) जैसे जैसे चंदा वसूल होता जाए उसे मर्कज़ में भिजवाया जाए।

(4) किसी नासिर से कोई चंदा बिना रसीद बुक के वसूल न किया जाए।

(5) साल में दो बार माल सप्ताह मनाएं।

(7) चंदों जात का प्रतिशत चंदा मज्लिस मासिक आय पर एक प्रतिशत।

चंदा सालाना इज्तिमा सालाना आय पर डेढ़ प्रतिशत साल में एक-बार।

चंदा इशाअत कम से कम शरह10 रुपए,

सामर्थय वान दोस्त अपने सामर्थय के अनुसार अदा करें।

(8) नौ मुबाईन को बजट में शामिल किया जाए।

माल की क़ुर्बानी की एहमीयत

माली क़ुर्बानी के नतीजा में अलालला तआला बढ़ा कर वापिस अता फ़रमाता है। जैसा कि फ़रमाया

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ۗ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۖ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ

(अलबकर 246) अर्थात कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ा हसना दे ताकि वह उस के लिए उसे कई गुना बढ़ाए। और अल्लाह (रिज़्क़) रोक भी कर लेता है और खोल भी देता है। और तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं। क़यामत के दिन हिसाब किताब ख़त्म होने तक अल्लाह के मार्ग में खर्च करने वाला अल्लाह की राह में ख़र्च किए हुए अपने माल के साए में रहेगा।

(मस्नद अहमद बिन हनबल)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम फ़रमाते हैं

"अल्लाह तआला जो क़र्ज़ मांगता है तो इस से यह मुराद नहीं होती है कि मआज़ अल्लाह, अल्लाह तआला को ज़रूरत है और वह मुहताज है ऐसा वहम करना भी कुफ्र है बल्कि उस का मतलब यह है कि बदला के साथ वापस करूँगा यह एक तरीक़ा है। अल्लाह तआला जिससे फ़ज़ल करना चाहता है।"

(तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद ऑजलद अव्वल स722)

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अंसार की क़ुर्बानीयों के नतीजा में मज्लिस अंसार अल्लाह का बजट भी हर साल तरक़्क़ी की तरफ़ बढ़ रहा है। नाज़मीन तथा ज़ुअमा क़िराम शीघ्र शत प्रतिशत फ़ीसद बजट वसूल कर के मर्कज़ भेजने की कोशिश करें।

अताउल मुजीब लोन
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE
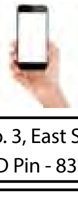
Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546
Akmal Tailor

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा और तब्लीग़ का फर्ज़

मुहम्मद कलीम ख़ान मुबल्लिग़ सिलसिला मरकराह, सूबा कर्नाटक

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के आदेश से मामूर होने और मन्सब मसीह मौऊद-ओ-मह्दी माहूद पर फ़ाइज़ होने के बाद एक किताब लिखी। जिसका नाम आपने "फ़तह इस्लाम" रखा। इस में इस्लाम की इशाअत और इस्लाह के लिए पाँच शाख़ों का वर्णन फ़रमाया है। उनमें पांचवीं शाख़ का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"पांचवीं शाख़ इस कारख़ाना की जो ख़ुदा तआला ने अपनी ख़ास वह्य और इलहाम से स्थापित की मुरीदों और बैअत करने वालों का सिलसिला है। अत: उसने इस सिलसिला की स्थापना करने के वक़्त मुझे फ़रमाया कि ज़मीन में ज़लालत का तूफ़ान छाया है। तू इस तूफ़ान के वक़्त में यह कश्ती तय्यार कर जो व्यक्ति इस कश्ती में सवार होगा वह डूबने से नजात पाएगा। और जो इन्कार में रहेगा उस के लिए मौत सम्मुख है। और फ़रमाया कि जो तेरे हाथ में हाथ देगा उसने तेरे हाथ में नहीं बल्कि ख़ुदा तआला के हाथ में हाथ दिया। और उस ख़ुदावंद ख़ुदा ने मुझे बशारत दी कि मैं तुझे वफ़ात दूँगा और अपनी तरफ़ उठाऊँगा मगर तेरे सच्चे अनुयायी और मुहब्बत करने वाले क़यामत के दिन तक रहेंगे और हमेशा मुनकरीन पर उन्हें ग़लबा रहेगा।"(फत्ह इस्लाम पृष्ठ 25)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस में जिस महफ़ूज़ कुश्ती का वर्णन फ़रमाया है इस का वर्णन पुराने बुज़ुर्गों ने भी बड़ी दर्दमंदी से किया है अत: हज़रत मुजद्दिद अलिफ़ सानी शेख़ अहमद सरहिंदी रहमहुल्लाह अलैहि ने अपने एक मकतूब मकतूब 47 दफ़्तर अव्वल-बहवाला तारीख़ दावत व अज़ीमत भाग 4 पृष्ठ 306 में किया है?

धर्म के पुनर्जागरण और शरीयत की स्थापना के लिए यही मुक़द्दर था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मह्दी के द्वारा और उनके ख़ुद्दाम सहाबा के ज़रीया दावत इलल्लाह का कर्तव्य अदा हो। अत: किताब फ़तह इस्लाम 1890 ई के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नई तय्याक जमअत की तर्बीयत फ़रमाई और ख़ुद बैरूनी हमलों का जवाब देते रहे। दावत इलल्लाह का फ़रीज़ा अदा करने के लिए कारख़ाना इलाही की पाँच शाख़ों पर काम जारी रहा। इस में मुनाज़रे करना भी शामिल है।(अल-हक़ दिल्ली ,अल-हक़ लुधियाना इत्यादि)

फिर एक वक़्त ऐसा आया कि आपके सहाबा किराम तर्बीयत पा कर तैयार हो गए। और इस फ़रीज़ा (दावत अल्लाह) को अदा करने के योग्य हो गए थे। इस लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुनाज़रा के मैदान ख़ुद अपने लिए छोड़ने का ऐलान अंजाम आथम पुस्तक में फ़र्मा दिया। और यूं अस्हाब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की संख्या बढ़ती गई और लगभग 1890 ई से 17 साल बाद 1907 ई मैं आपने दावत अली अल्लाह के फ़रीज़ा की अदायगी के लिए"वक़्फ़ ज़िंदगी" की तहरीक फ़रमाई।

(तारीख़ अहमदियत भाग 2 पृष्ठ 498)

इस पर सहाबा कराम ने लब्बैक कहा और फ़रीज़ा (दावत अली अल्लाह अदा करने लग गए

इस निबन्ध में सहाबा किराम के चंद नमूने दावत इल्लाह के पेश किए जाते हैं।

वक़्फ़ ज़िंदगी की तहरीक में लब्बैक कहने वालों में

से हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो और हज़रत चौधरी फ़तह मुहम्मद स्याल साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो शामिल हैं।

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब ने अक़्ली तथा नक़्ली दलीलों से दावत इलल्लाह का काम किया है यह अलग एक तारीख़ी हक़ीक़त है मगर शौक़ तब्लीग़ को देखें अत: लिखा है कि एक सोते हुए शख़्स को तब्लीग़

"एक बार हज़रत मुफ़्ती साहिब अहमदाबाद गए वहां एक गली में से गुज़ुर रहे थे कि एक मस्जिद दिखाई दी। हज़रत मुफ़्ती साहिब उस के अंदर चले गए। तीसरे पहर का वक़्त था मस्जिद में एक साहिब अच्छी सूरत अच्छे कपड़े पहने हुए पड़े सो रहे थे । हज़रत मुफ़्ती साहिब का दिल चाहा कि इस सोते हुए शख़्स को तब्लीग़ करनी चाहिए। यह सोच कर आपने उसे झंझोड़ा और फ़रमाया मियां यह सोने का वक़्त है? उठो। देखो इमाम मह्दी अलैहिस्सलाम तशरीफ़ ले आए। दुनिया जाग गई मगर तुम अभी तक सो ही रहे हो।

मालूम होता है कि वह आदमी बहुत ही बे-ख़बर पड़ा सो रहा था। हज़रत मुफ़्ती साहिब के झंझोड़ने और पैग़ाम पहुंचाने से कुछ यूंही सा बेदार हुआ और नींद के दौरान में कहने लगा अच्छा इमाम मह्दी आ गए अच्छी बात है। और यह कह कर फिर बे-ख़बर पड़ कर सो गया। हज़रत मुफ़्ती साहिब ने उसे झिंझोड़ कर उठाया। और कहा कि मियां किया सो रहे हो। उठो हज़रत मसीह मौऊद तशरीफ़ ले आए। नींद की हालत में वह कहने लगा अच्छा मसीह मौऊद आ गए बहुत अच्छा हुआ। और फिर सो गया। तीसरी बार हज़रत मुफ़्ती साहिब ने उसे फिर जगाया मियां सोने से क्या बनेगा उठो देखो इस ज़माना का मुजद्दिद आ गया और तुम ग़ाफ़िल पड़े सो रहे हो। वह नींद की हालत में कहने लगा अच्छी बात है। बहुत अच्छा। रात को नींद नहीं आई थी। बहुत नींद आ रही है। यह बोला और फिर ग़ाफ़िल सो गया। जब मुफ़्ती साहिब ने देखा कि किसी तरह उठता ही नहीं तो विवश हो कर उसे सोता छोड़ कर गए।"

(लताइफ़ सादिक़ पृष्ठ 56,56 संकलन शेख़ मुहम्मद इस्माईल पानीपती प्रकाशन कादियान 1946 ई)

दूसरे एक बुज़ुर्ग सहाबी हज़रत चौधरी फ़तह मुहम्मद स्याल साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्नहो की घटना है कि दावत इलल्लाह के फ़रीज़ा की अदायगी के लिए उनकी भावना इतनी बुलंद थी कि ना-मुवाफ़िक़ हालत और मुख़ालिफ़ हालात में भी यह फ़रीज़ा अदा कर दिया अत: घटना यूं हुई कि हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के ज़माना में 1913 ई आपको लंदन भेजा गया था। केवल दावत इलल्लाह के फ़रीज़ा की अदायगी के लिए मगर आपके जाने से पहले जमाअत के एक पुराने कारकुन जनाब ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब मरहूम वहां पहुंचे हुए थे। जो दरअसल एक मुक़द्दमा में किसी ग़ैर अहमदी की तरफ़ से वकालत करने गए थे मगर हज़रत ख़लीफ़तु-मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से सम्पर्क में थे और तब्लीग़ इस्लाम का दम भरते थे। इस लिए हज़रत चौधरी साहिब को फ़रमाया गया था कि ख़्वाजा साहिब के अधीन रह कर काम करें। मगर लंदन पहुंचते ही दोनों में ंतभेद हो गया। ख़्वाजा साहिब तब्लीग़ इस्लाम के वक़्त हज़रत इमाम मह्दी व मसीह मौऊद का नाम लेने को डरते थे। उन्हें ख़्वाह-मख़ाह ख़ौफ़ हो गया था कि कोई बड़ी मुसीबत हो जाएगी। जबकि हज़रत चौधरी फ़तह मुहम्मद स्याल साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो इस नज़रिया के ख़िलाफ़ तब्लीग़ इस्लाम में हज़रत मसीह-ओ-मह्दी का नाम खुल्लम खुल्ला लेना चाहते थे। और आप अलैहिस्सलाम के ज़िक्र को छोड़कर मुर्दा इस्लाम ही पेश कर सकते थे। बहरहाल हज़रत चौधरी साहिब इस कश्मकश में थे। आप हैं फरमाते हैं कि

"ख़्वाजा साहिब मरहूम मस्जिद से पब्लिग लैक्चर का काम नहीं लेते थे। और सिर्फ ख़ास लोगों को बुला कर तब्लीग़ करते थे। इस बात से डरते थे कि लोग

भीड़ करके हमारे ऊपर हमला न कर दें। ख़्वाजा साहिब के इस वहम से मुझे हैरत होती थी। दूसरा मुझे वह मेहमानों से मिलने भी न देते थे। इस की वजह ये थी कि उनको यह डर था कि मैं लोगों से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आने के बारे में वर्णन कर दूंगा। और इस से आम मुस्लमान रुपया पैसा मदद देनी छोड़ देंगे। और ग़ालिबन मस्जिद भी छिन जाएगी। मुझे उन बातों से सख़्त घबराहट होती थी और मैंने अपनी तबीयत के ख़िलाफ़ एक सख़्त बेक़ाइदगी की। वह यह कि ख़्वाजा साहिब के इल्म और आज्ञा के बिना एक पोस्टर छपवाकर समस्त वोगिंग में बांट दिया कि अगले इतवार की सुबह वोकिंग मस्जिद में इस्लाम की ख़ूबियों पर लैक्चर होगा। और हर ख़ास तथा साधारण को दावत है कि मस्जिद में निर्धारित समसय पर आकर लैक्चर से लाभान्वित हों। तक़सीम करने के अतिरिक्त कुछ निर्धारित जगह पर पोस्टर चिपका दिया। और बाक़ी पोस्टर मिशन हाऊस में आकर ख़्वाजा साहिब के सामने रख दिए। ख़्वाजा साहिब इन पोस्टरों को पढ़ कर सख़्त घबराए और मुझे कहा कि उनको प्रकाशित मत करो। मैंने कहा कि यह तो अब प्रकाशित हो चुका है। और तमाम शहर में बंट भी चुका है। भविष्य के लिए आप बंद कर दें लेकिन यह लैक्चर ज़रूर होगा। और ईसाईयों के सामने इस्लाम की ख़ूबियों पर लैक्चर देने का कोई नुक़्सान जो होगा मैं भर लूंगा। आप तकलीफ़ न करें या उस वक़्त आप कहीं तशरीफ़ ले जाएं। ख़्वाजा साहब दिल से समझते थे कि झगड़ा ज़रूर हो जाएगा। इस लिए उन्होंने एक वकील बुलाया। उन्होंने और भी डरा दिया। मुझे यक़ीन है कि इन लोगों ने शरारत से ऐसा किया है। वल्लाह

दरहक़ीक़त कोई ख़तरा नहीं था परन्तु ख़्वाजा साहिब इन बातों में आकर निढाल हो गए। और कमर दर्द के दौरा से जो उनको प्राय हुआ करता था बीमार हो गए। इतवार आया मस्जिद लोगों से भर गई और कुछ पादरी साहिब भी आए। एक आस्ट्रेलिया का मुस्लमान लंदन आ गया। मैंने 45 मिनट के क़रीब तक़रीर की। बाद में हाज़रीन को सवाल करने की इजाज़त दी। पादरीयों ने चंद सवाल किए। मैंने उनका जवाब दे दिया। इस के बाद हाज़िरीन में से नए मुस्लिम ऑस्ट्रेलियन खड़ा हुआ और कहा कि मैं स्टेज पर आकर कुछ कहना चाहता हूं। मैं मस्जिद में अकेला था मैंने ख़्याल किया कि शायद यह शख़्स शरारत करे। और ख़्वाजा साहिब की बात पूरी हो जाएगी। आख़िर मेरी तबीयत ने यही फ़ैसला किया कि उसे आने दिया जाए। वह साहिब स्टेज पर आए। और उन्होंने इस्लाम पर एक जोश वाली तक़रीर की। इस के बाद हाज़िरीन में से कुछ लोगों ने खड़े हो कर नियम के अनुसार मेरा शुक्रिया अदा किया और कहा कि हम धन्यवादी होंगे अगर इस किस्म के लैक्चर प्रत्येक सप्ताह जारी कर दिए जाएं ।

वे लोग सिलसिला के बारे में इलम हासिल करने के लिए बहुत इच्छुक थे। मैंने उन लोगों से इस बात का वादा किया। और ख़्वाजा साहिब को जाकर सारी बात निवदन कर दी। ख़्वाजा साहिब बहुत ख़ुश हुए। कमर दर्द ग़ालिबन उसी वक़्त काफ़ूर हो गया। और अपने आप कहने लगे कि अगले इतवार को मैं ख़ुद लैक्चर दूँगा।

(अलहकम नंबर दिसम्बर 1937 ई पृष्ठ 11,12)

ये हैं सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिनके अंदर जज़्बा दावत इलल्लाह का फ़रीज़ा सरायत कर गया था अल्लाह तआला की मदद तथा सहयाता को जज़्ब करते थे।

हर तरफ़ आवाज़ देना है हमारा काम आज
जिसकी फ़ित्रत नेक हो आएगा अंजाम कार

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें सहाबा रज़ि के नक़्शे क़दम पर चलते हुए उत्तम रूप में फ़रीज़ा तब्लीग़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

******